P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-I*September-2015

सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव

सारांश

सोशल मीडिया आज हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में पहुंच गया है।कोई भी नवीन प्रौद्योगिकी अथवा यंत्र उत्सुकता और संशय, दोनों जागृत करते है, नवीन प्रौद्योगिकियां तथा प्रणालियां, हमारे जीवन जीने के ढंग को विघटित एवं परिवर्तित कर देने की अंतःशक्ति रखती हैं। दिसम्बर, 2012 में दिल्ली में एक 23 वर्षीय लड़की के ऊपर हुए बर्बरतापूर्ण हमले के परिणामस्वरूप उपजे क्रोध एवं क्षोभ के उफान से देशभर में छात्रों, युवाओं तथा क्षुब्ध नागरिकों द्वारा विरोध–प्रदर्शन मार्च एवं रैलियों का अम्बार लग गया था, जो सोशल मीडिया की बढ़ती शक्ति की ही अभिव्यक्ति थी। पीड़ित लड़की की लगभग दो हफ्ते तक जीवन से संघर्ष करते हुए दुःखद मृत्यु हो गयी थी। इसने लोकतंत्र एवं शासन के नियमित संकट को भी बेनकाब कर दिया था। जंतर–मंतर पर एक बैनर पर ठीक हो लिखा था, 'वह एक अरब दिलों को उद्वेलित करते हुए लाखों मौत मरी।'' सबका कहना है कि सोशल मीडिया का अस्तित्व निरंतर कायम रहेगा सोशल मीडिया अत्यंत शक्तिशाली है, बढ़ती संख्या से इसका पता चला ह।

मंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
आई0 एम0 आर0 दुहाई,
गाजियाबाद

मुख्य शब्द : लामबंद, वैश्विक, अंतः शक्ति, उन्माद, संभ्रात।

प्रस्तावना

सोशल मीडिया आज हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में पहुँच गया है। इंटरनेट की ऐतिहासिक अदृश्य दीवारें रोजाना ध्वस्त हो रही है। सोशल मीडिया की मुद्रा डालर, यूरो अथवा युआन नहीं है, बल्कि विनियोजन, भागीदारी तथा मूल्य सृजन है, सृजना के युग में विजेता सशक्त नागरिक, सुशासन, अच्छे उत्पाद और अच्छी लोकतांत्रिक प्रथायें है, लेकिन सोशल मीडिया का एक खराब पहलू भी है। इससे हमारी व्यक्तिगत निजता इस आंगुलिक (डिजिटल) सशक्तिकरण का शिकार हो चुकी है।

कोई भी नवीन प्रौद्योगिकी अथवा यंत्र उत्सुकता और संशय, दोनों जागृत करते है, नवीन प्रौद्योगिकियां तथा प्रणालियां, हमारे जीवन जीने के ढंग को विघटित एवं परिवर्तित कर देने की अंतःशक्ति रखतो हैं।

सोशल मीडिया तीव्रता के साथ विकसित हुआ है क्योंकि यह अनेक सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करता है इसका विकास नेटवर्किंग के बढ़ते महत्व के कारण भी हुआ है, सोशल नेटवर्किंग साइटो (फेसबुक), माइक्रो ब्लॉगिंग सेवाओं (ट्विटर) कंटेंट शेयरिंग साइटों (यू ट्यूब, फ्लिकर) ने व्यापक स्तर पर ऑनलाइन सामाजिक भागीदारी के लिए अवसर प्रस्तुत किया है।

नरेन्द्र मोदी भारत में पहले नेता है जिन्होंने सोशल मीडिया के महत्व को समझा था, उन्होंने युवा तथा वृद्ध, सभी को समान रूप से लामबंद करने के लिए इसका प्रयोग किया। आज वे भारत में ही नहीं विश्व में भी सर्वाधिक प्रसिद्ध लोगों में से एक है। 125 देशों के 285 शहरों में कराये गये वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (डब्लूईफ) के ग्लोबल शेपर्स एनुअल सर्वे 2015 में तीन फीसद वोट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पक्ष में पड़े। देश में लोकप्रियता की बुलन्दी छू रहे प्रधानमंत्री नरेन्द मोदी को दुनिया भर में सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली हस्तियों में दसवें पायदान पर रखा गया है। सोशल मीडिया को धन्यवाद है कि हमें अब समाचार ढूढंना नहीं पड़ता है बल्कि समाचार हमें ढूंढ लेता है, वेब प्रौद्योगिकियों को धन्यवाद है कि पहले, जहां आवाजें वार्तालाप से अलग होती थीं, अब उसे एक धारा मिल सकती है और उनका आयोजन पहले की अपेक्षा अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। वे विशेषज्ञ पत्रकारों के प्रत्ययपत्र की जांच कर सकती हैं तथा ईमल साझा कर सकती हैं, जो यह दर्शाता है कि कैसे शैक्षिक जगत का प्रत्येक लघु–भूमिका में वैसा ही राजनीतिकरण कर दिया गया है, जैसे शेष विश्व का कुछ मायनों में सोशल मीडिया वैकल्पिक जनसंचार माध्यम के रूप में उभरा है। यह 'बेजुबान' तथा उपेक्षितों की आवाज बुलंद कर रहा है।

सामाजिक आंदोलन सहस्राब्दि से विभिन्न रूपों में अस्तित्व में आ चुके है। किन्तु इंटरनेट क्षुब्ध समूहों के लिए नवीन मार्ग पेश कर रहा है, जनता यह निर्णय ले चुकी है कि अलग तरीके से जीवनयापन प्रारम्भ करने के लिए क्रांति की प्रतीक्षा नहीं करनी है। आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संकटों की संहति को शुक्रिया, कि जनता अब अपने जीवन का नियंत्रण स्वयं लेना चाहती हैं, समूचे विश्व में हाशिये पर धकेले गये समूह तथा मध्य वर्ग के लोग आर्थिक अधिकार वंचन का अनुभव कर रहे हैं। पहले संभ्रांत व्यक्ति आंदोलन का नेतृत्व करता था और मध्य वर्ग उसका अनुसरण करता था। आज मध्य वर्ग नेतृत्व भी करना चाहता है। जैसा कि युवा विशेषकर छात्रों का सरोकार है, उन्हें कोई भविष्य नजर नहीं आता है यदि वर्तमान प्रणाली बनी रहती है।

कुछ लोग तर्क देते हैं कि विरोध प्रदर्शन आंदोलनों पर सोशल मीडिया का प्रभाव बेशक संतुलित रहा है। यह सिर्फ शोरगुल तथा उन्माद फैलाता है, ऐसे आंदोलनों के निष्कर्ष पर इसका प्रभाव अल्प रहा है।

सोशल मीडिया अनुप्रयोगों जैसे फेसबुक, ट्विटर तथा यू ट्यूब को राजनीतिज्ञों, राजनीतिक कार्यकर्ताओं तथा सामाजिक आंदोलनों द्वारा नागरिकों को कार्यव्यस्त संगठित तथा सूचित करने हेतु एक माध्यम के रूप में तेजी से अपनाया जा रहा है। यह एप्स तथा सोशल मीडिया प्रौद्योगिकयां सामूहिक कल्पनाओं को प्रेरित करती है। पिछले कुछ वर्षो में कोई भी देख चुका है कि कैसे सोशल नेटवर्किंग, ब्लॉगिंग, विडियो–शेयरिंग तथा ट्विटिंग हेतु इंटरनेट के व्यापक प्रयोग ने प्रतिभागी लोकतंत्र के साथ एक घनिष्ठ संबंध सृजित किया है। इस दृष्टि से सोशल मीडिया लोकतांत्रिक नवीकरण का एक उपकरण बन चुका है। ऐसा हमने अन्ना हजारे आंदोलन के दौरान देखा था।

दिसम्बर, 2012 में दिल्ली में एक 23 वर्षाय लड़की के ऊपर हुए बर्बरतापूर्ण हमले के परिणामस्वरूप उपजे क्रोध एवं क्षोभ के उफान से देशभर में छात्रों, युवाओं तथा क्षुब्ध नागरिकों द्वारा विरोध–प्रदर्शन मार्च एवं रैलियों का अम्बार लग गया था, जो सोशल मीडिया की बढ़ती शक्ति की ही अभिव्यक्ति थी। पीडित लड़की की लगभग दो हफ्ते तक जीवन से संघर्ष करते हुए दुःखद मृत्यु हो गयी थी। इसने लोकतंत्र एवं शासन के नियमित संकट को भी बेनकाब कर दिया था। जंतर–मंतर पर एक बैनर पर ठीक ही लिखा था, 'वह एक अरब दिलों को उद्वेलित करते हुए लाखों मौत मरी।''

लेकिन सोशल मीडिया का एक स्याह पक्ष भी है, शेरी टंकेल की पुस्तक का शीर्षक 'एलोन टुगेदर' यानि 'साथ–साथ अकेले' सब कुछ बयां कर देता है यह तर्क देती है कि कैसे इस सोशल मीडिया के युग में 'हम प्रौद्योगिकी से ज्यादा चाहते हैं और एक दूसरे से कम; लेखिका कहती है यद्यपि इस प्रौद्योगिकी से हम अपने भावनात्मक जीवन का सृजन, संचालन एवं निष्पादन करते हैं।

इंटरनेट जोड़ता है किन्तु यह स्पर्श नहीं करता है। टंकन कहती है हम कही से भी कार्य करने के लिए स्वतंत्र हो सकते हैं, किन्तु हम प्रत्येक जगह अकेले भी हो सकते हैं। एक आश्चर्यजनक मोड़ के अंतर्गत इससे निरंतर जुड़ाव एक नवीन निर्जनता की ओर ले जाता है।

कमियों को पूरा करने के लिए हम नई प्रौद्योगिकी की ओर जाते हैं, किन्तु जैसे–जैसे प्रौद्योगिकी ऊपर की ओर जाती है, हमारे भावनात्मक जीवन में अवमूल्यन होता है।

सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग से साइबर अपराध तथा साइबर वर्चस्व को बढ़ावा मिला है, इससे सामाजिक पूंजी में भी ह्रास हुआ है। एक विशेषज्ञ ने इसको 'एक सामाजिक मृत्यु दण्ड' कहा है। कुछ लोग यह मुद्दा उठाते हैं कि क्या सोशल मीडिया लोकतांत्रिक भी है, आज इस्लामिक स्टेट जैसे उग्रवादी समूह युवाओं को प्रलोभन देने तथा उन्हें उग्रवादियों के रूप में प्रशिक्षित करने के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग करे रहे हैं।

सबका कहना है कि सोशल मीडिया का अस्तित्व निरंतर कायम रहेगा सोशल मीडिया अत्यंत शक्तिशाली है, बढ़ती संख्या से इसका पता चला है। गूगल तथा फेसबुक पर प्रतिमाह अतुल्य 2 अरब संयुक्त विजिट प्राप्त होते हैं, सभी संकेत देते हैं कि वैश्विक सोशल मीडिया प्रयोग केवल एक उपरिगामी प्रक्षेप–पथ देखेगा अर्थात् निरंतर बढ़ेगा। वास्तव में सोशल मीडिया के हमारे जीवन के अनेक अन्य पहलुओं में और अधिक व्याप्त होने की संभावना है, लेकिन मानव सम्पर्क की आवश्यकता कभी समाप्त नहीं होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लाल एवं फ्लोड, 2010. शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. पाण्डे, आर. एस. 2009, चाइल्ड सोशलाइजेशन एण्ड मॉर्डनाइजेशन, सोम्या पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. डेमण्ड, जुंग, सोशल मीडिया का समाज तथा व्यक्ति पर नकारात्मक प्रभाव।
4. अली, इम्त्याज, सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक तथा सकारात्मक प्रभाव।
5. टंकेल, शेरी. एलोन टुगेदर।
6. रोजगार समाचार (5–11 सितम्बर 2015) नई दिल्ली।